International Journal of Advanced Research in Arts, Science, Engineering & Management (IJARASEM)

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 5.379 |Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 9, Issue 6, November 2022 |

प्रेमचंद के कथा साहित्य में वृद्ध जनों का चित्रण

MR. DHEERAJ KUMAR GUPTA

Assistant Professor, Dept. of Hindi, Government College, Hindaun City, Rajasthan, India

सार

बूढ़ी काकी' कहानी में समाज की ज्वलन्त वृद्ध-समस्या का यथार्थ चित्रण : मुंशी प्रेमचन्द की कहानियों में सामाजिक समस्याओं को प्रमुखता से उठाया गया है। बूढ़ी काकी नामक कहानी भी इसी कोटि की कहानी है, जिसमें वृद्धजनों के प्रति समाज में उपेक्षा की पनपती समस्या को स्वाभाविक ढंग से चित्रित किया गया है। लेखक ने गंभीरता के साथ बूढ़ी काकी के साथ होने वाले जिस उपेक्षापूर्ण व्यवहार को उठाया है, वह अकेली काकी के ही साथ नहीं हैं, अपितु समाज में ऐसे कितने ही वृद्ध हैं। कहानीकार कहता है कि पंडित बुद्धिराम और उसकी पत्नी रूपा का व्यवहार एक दम बदल गया और वे यह भी भूल गये कि वे आज जिस संपत्ति के मालिक हैं, वह सब इसी बूढ़ी काकी की दी हुई है। गावं में मिली प्रतिष्ठा संपत्ति की आय के कारण है, लेकिन जिसकी जायदाद है उसके लिए भरपेट भोजन तक भी नहीं है।

परिचय

मुंशी प्रेमचन्द की कहानियों में सामाजिक समस्याओं को प्रमुखता से उठाया गया है। बूढ़ी काकी नामक कहानी भी इसी कोटि की कहानी है, जिसमें वृद्धजनों के प्रति समाज में उपेक्षा की पनपती समस्या को स्वाभाविक ढंग से चित्रित किया गया है। लेखक ने गंभीरता के साथ बूढ़ी काकी के साथ होने वाले जिस उपेक्षापूर्ण व्यवहार को उठाया है, वह अकेली काकी के ही साथ नहीं हैं, अपितु समाज में ऐसे कितने ही वृद्ध हैं।[1,2,3] पंडित बुद्धिराम जैसे लालची लोग मीठी-मीठी बातों में बहला-फुसलाकर बूढों से उनकी संपत्ति अपने नाम लिखवा लेते हैं। खूब लम्बे-चैड़े वायदे करते हैं, लेकिन बहुत जल्दी ही उनका घिनौना रूप सामने आ जाता है। इसमें कोई सन्देह नहीं कि बुढापा आते ही मानव के स्वभाव में बचपन के गुण आने लगते हैं। बूढ़ी काकी के आचरण में भी इसके लक्षण थे, लेकिन कहानीकार कहता है कि यह सब बात पंडित बुद्धिराम को उस समय सोचनी चाहिए थी, जब वह आश्वासनों पर विश्वास बूढ़ी काकी ने डेढ़-दो सौ रूपये प्रतिवर्ष की आय वाली जायदाद उसके नाम लिख दी थी। यह ठीक है कि बूढ़ी काकी अपनी इच्छा पूरी न होते देख रोने-चीखने लगती थी, परन्तु इसके सिवा वह कर भी क्या सकती थी।

कहानीकार कहता है कि पंडित बुद्धिराम और उसकी पत्नी रूपा का व्यवहार एक दम बदल गया और वे यह भी भूल गये कि वे आज जिस संपत्ति के मालिक हैं, वह सब इसी बूढ़ी काकी की दी हुई है। गावं में मिली प्रतिष्ठा संपत्ति की आय के कारण है, लेकिन जिसकी जायदाद है उसके लिए भरपेट भोजन तक भी नहीं है। भूख के कारण बूढ़ी काकी की इच्छाएं अतृप्त रहती है। साथ कहानीकार ने ध्यान आकर्षित किया है कि भूख और जीभ का स्वाद मनुष्य को कहां तक गिरा सकता है। मार खाती है, अपमानित होती है, भला-बुरा सुनती है; परन्तु मन में भूख की लालसा रह-रहकर उसे बेचैन करती रहती है। इसके पीछे मुंशी प्रेमचन्द ने समाज में व्याप्त उस समस्या की ओर ध्यान खींचा है, जहां बूढ़ों की भावनाओं की कद्र नहीं होती। आज की नयी पीढ़ी वृद्धों को अपनी आधुनिकता के मार्ग में बाधक समझती है। यहां तक कि उनका भद्दा मजाक भी उड़ाया जाता है। 'बूढ़ी काकी' कहानी में लेखक ने बुद्धिराम के लड़कों द्वारा न केवल उसे चिढ़ाया जाता है, अपितु उसके ऊपर मुंह के जूठे पानी के कुल्ले करना आम बात है। कभी काकी को नोचं कर भाग जाते हैं तो कभी बालों को खींचकर चले जाते हैं, [4,5,6]लेकिन बुद्धिराम या उसकी पत्नी रूपा अपने लड़कों को डांटना तो दूर, मना तो नहीं करते। इस तरह के व्यवहार से भी परिवार के वृद्धजन टूट जाते हैं। यह स्थिति अकेली बूढ़ी काकी की नहीं, अपितु समूचे समाज की है जिसमें युवाओं द्वारा वृद्धों के प्रति दुव्र्यवहार किया जाता है।

इसी तरह लेखक ने स्वयं बुद्धिराम और उसकी पत्नी रूपा के व्यवहार को उस समय घृणास्पद बना दिया है, जब वह काकी पकवानों की खुशबू से अधीर होकर हलवाइयों के पास कड़ाहे के पास जा बैठती है। रूपा एक तरफ तो मेहमानों के इशारों पर नाच रही है, वहीं दूसरी तरफ कड़ाहे के पास बूढ़ी काकी को बैठी देख आग बबूला हो जाती है। अपशब्द बोलती है और कहती है कि उसकी इसी में भलाई है कि चुपचाप अपनी कोठरी में चली जाए। विवश और लाचार काकी के पास जाने के सिवा कोई रास्ता नहीं होता। मन मारकर सोचती रहती है। इसके माध्यम से कहानीकार कहना चाहता है कि आखिर बड़-े बूढ़ांे की भी इच्छा होती है। जिस तरह सगाई-विवाह समारोहों में शामिल होकर आप आनन्द लेना चाहते हैं, उसी प्रकार उन्हें क्यों नहीं शामिल करते। झूठा-प्रदर्शन करने से कोई लाभ नहीं। बाहर से अतिथियों की तो हर इच्छा पूरी करने का प्रयास किया जाता है लेकिन अपने घर के वृद्धों की उपेक्षा की जाती है, जो किसी भी तरह उचित नहीं माना जा सकता।

मुंशी प्रेमचन्द ने इस कहानी के माध्यम से वृद्धों की उपेक्षा करने वाले स्वार्थी बुद्धिराम जैसे लोगों को समाज के भीतर उस समय नंगा कर दिया है, जब बूढ़ी काकी अधीर होकर दावत खा रहे लोगों के बीच आ बैठती है और सभी लोग उसकी बदहाली को देखकर 'कौन है-कौन है' कहकर चिल्लाने लगते हैं। यहां तक कि उसका भतीजा बुद्धिराम आकर उसे दोनों हाथों से उठाकर कोठरी में ले जाकर पटक देता है और खूब खरी-खोटी सुनाता है। बुढ़िया चुपचाप पड़ी रहती है और कोई उसे खाने तक की नहीं पूछता। उस समय समाज की दशा और भी दयनीय हो जाती है, जब वह बुढ़िया लाडली का हाथ पकड़कर पत्तलों की जूठन चाटने लगती है। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि मुंशी प्रेमचन्द ने अपनी कहानी 'बूढ़ी काकी' में वर्तमान समाज की ज्वलन्त वृद्ध-समस्या को सहजता और स्वाभाविकता के साथ प्रभावी ढंग से उठाया है। बूढ़ी काकी की दुर्दशा को देखकर मानवीय हृदय न केवल करूणा एवं सहानुभूति से भर उठता है अपितु, आत्मचिंतन के लिए बाध्य-सा कर देता है।

विचार-विमर्श

प्रेमचंद की ईदगाह और बूढ़ी काकी पढ़ते हुए ऐसा लगा जैसे इसके किरदार मेरे बगल में आ बैठे हों। हामिद और दादी के रिश्ते को तो गहरे प्रेम के साथ व्यक्त किया ही समाज के ढांचे से भी परिचय करवाया। किस तरह बाकी बच्चे ईद मना रहे थे और हामिद की ईद दादी के इर्द-गिर्द घूम रही थी। बूढ़ी काकी का बुढ़ापा यदि वो बताते हैं तो घरों के अंदर मौजूद परायापन भी बताते हैं। किस तरह संबंध आर्थिक धुरी पर घूमते हैं यह भी बताते हैं। ये आज का भी सच है कुछ भी नहीं बदला। इस कहानी में प्रेमचंद ने वृद्धावस्था की ऐसी स्थिति का वर्णन किया है जब वृद्ध एकदम बच्चा हो जाता है। [7,8,9]जब बुढापे में केवल स्वादिष्ट खाने पर ही मन ललचाता है। लेकिन इस कहानी में बूढ़ी काकी के साथ जिस तरह का व्यवहार रूपा और उसके परिवार वालों ने किया पढ़कर सच में आँखें गीली हो गईं । बूढ़ी काकी के विधवा होने पर सामाजिक रूप से किसी भी अच्छे काम में उपस्थिति से मना करना, उपेक्षित और अपमानित करना, मन में क्रोध उत्पन्न करता है। सगाई के दिन बच्चों जैसे मिठाई खाने की चाहत, पकते हुए पकवान की सुगंध से उसे खाने की बेचैनी और परिवार वालों द्वारा उनकी उपस्थिति से अपशगुन होने के भय के बीच अंतर्द्वंद्व का मार्मिक चित्रण है।

यह तो वृद्धों का एक पक्ष है। लेकिन वृद्धों की इन मानसिकताओं को संवेदनशीलता के साथ समझने की भी आवश्यकता है। वृद्धों के इस आचरण का मनोवैज्ञानिक कारण भी है और यह मनोवैज्ञानिक कारण है- सामाजिक, पारिवारिक और दैहिक सत्ता का हस्तांतरण। आज तक उन्हें पदानुक्रम में श्रेष्ठ की हैसियत प्राप्त थी। उन्हीं का आदेश सर्वोपरि था। घर के अन्दर सास का साम्राज्य और घर के बाहर पिता का। लेकिन बहू के प्रवेश से सास के अधिकारों में हिस्सेदारी की मांग बढ़ी। धीरे-धीरे परिवार में बहू की प्रमुखता ने घर के अन्दर सत्ता का हस्तांतरण किया उसी तरह घर के बाहर सभी तरह के निर्णयों में पुत्र के हस्तक्षेप से पिता की सत्ता में सेंध लगी। शारीरिक रूप से भी कल तक जो व्यक्ति 'पूर्णता' में था, आज निरूपाय-सा है। मन तो कुलांचे मारता है किन्तु देह मन का साथ नहीं दे पाता। अब तक देह की क्षमता का रूपांतरण भी बहू और बेटे में हो चुका होता है।[10,11,12] तात्पर्य यह कि सारा खेल सभी तरह की सत्ता का हस्तांतरण का है, जो वृद्धों को मनोवैज्ञानिक रूप से कटु, तिक्त और कई बार मनोरोगी तक बना डालता है। नए-नए परिवर्तन, नयी उपलब्धियाँ और आविष्कार भी उन्हें कहीं न कहीं ललचाते हैं। इन उपलब्धियों का उपयोग न कर पाने का अज्ञात क्षोभ भी उन्हें इसका विरोधी बना डालता है। वृद्ध अपने पुराने मूल्य और धारणाओं से बंधे होने के कारण नए मूल्य और नई बयार को नापंसद करते हैं। पुराने मूल्य में जीने की आदत हो जाने के कारण वे नये मूल्य और नई जीवन शैली से सामजस्य नहीं बैठा पाते।[13,14,15] इसलिए वे हर तरह के नए बदलाव को वे अपसंस्कृति का हिस्सा मानते हैं।

परिणाम

साहित्य और विमर्श का एक महत्वपूर्ण बिंदु यह भी है कि यह उपेक्षितों को वाणी देने का काम करता है। वृद्धों के साथ एक विसंगति यह है साहित्य और समाज में कहीं यह निर्णायक भूमिका में है तो कहीं उपेक्षित की भूमिका में। सामाजिक और आर्थिक संरचना में परिवर्तन के साथ पारिवारिक रिश्तों की भूमिकाओं में भी बदलाव होता है। परिवर्तन की इन बारीकियों को समझने के लिए साहित्य एक बेहतरीन माध्यम है। प्रेमचंद की कहानी 'बूढी काकी' की पात्र रूपा वृद्ध बूढी काकी के प्रति अपने उपेक्षित व्यवहार के लिए ग्लानि महसूस करती है।

समकालीन दौर में मूल्यहीनता तो बढ़ा ही है, साथ ही तनाव के बाहुपाश ने भी हम सब को जकड़ रखा है। सूचना और तकनीक के तमाम विकल्प और स्रोतों के बावजूद हम कहीं न कहीं तनाव से घिरे हुए हैं। ऐसे में स्वाभाविक है कि निजी सेवाओं में कार्यरत युवा भी तनावमुक्त नहीं रह सकता। [16,17,18]वह घर आकर शान्ति की तलाश में रहता है और वृद्ध माता-पिता हैं कि अपनी जिज्ञासा पूर्ति के लिए शाम को बेटे की राह देखते रहते हैं। कई बार माता-पिता की जिज्ञासाओं को पुत्र अपने जीवन में दखल के रूप में लेता है। यहीं से विचारों में मतभेद शुरू हो जाता है। [19,20,21]युवा अपने विचार पुरानी पीढी को समझाना नहीं चाहता और पुरानी पीढी युवा को अपने विचार समझाना तो चाहती है, किन्तु युवा समझना नहीं चाहता। उसके पास समझने के लिए न ही समय है और न ही धैर्य। यहाँ पर दोनों के विचार आपस में नहीं जुड़ पाते, जिसके कारण मतभेद के साथ मनभेद भी शुरू हो जाता है। दोनों पीढी के परिवेश और मूल्य भिन्न होते हैं, पुरानी पीढ़ी के पास अपने अनुभव से कमाए हुए मूल्य होते हैं, और नई पीढ़ी के पास उनके अपने परिवेश के नए मूल्य। वृद्ध अपने पुराने मूल्य पर नई पीढ़ी को चलाना चाहता है और नई पीढ़ी अपने नए मूल्य से अपनी जिंदगी जीना चाहती है। समय परिवर्तनशील है, इसलिए दोनों पीढी के परिवेश, विचार और मूल्य एक नहीं हो सकते हैं। इसलिए दोनों के लिए यह अति आवश्यक है कि एक दूसरे के मूल्य और विचारों को समझें ताकि टकराहट पैदा न हो सके।

इन मनोवैज्ञानिक ग्रंथियों को समझकर उनके प्रति संवेदनशील होने की आवश्यकता है, क्योंकि वृद्ध समाज की थाती हैं। इन्हीं वृद्धों की बदौलत युवाओं का आचरण अनुशासित हो पाता है, क्योंकि वृद्ध कई बार नयी पीढी अराजक होने से अपने को बचा लेती है। हम अपनी संस्कृति और परम्पराओं के गतिशील और उर्जस्वित छवियों से रूबरू हो पाते हैं। इसलिए इन वृद्धों को ससम्मान बचाकर रखना नयी पीढी की जिम्मेदारी है।[22,23,24]

निष्कर्ष

वृद्धविहीन समाज निश्चित रूप से असंतुलित समाज होगा।

इस दृष्टि से अच्छी कविता है-

चढ़ता दरिया बनकर और उफन के
गर पाना चाहे मंजिल कोई
देकर मशविरा तहजीब का,
एक तर्जुबा बन जाते हैं हमारे बुजुर्ग
जब ये एहतराम होता है कि
कोई हमारा साथी, रहनुमा भी नहीं
खुशियों की जिन्दगी में तब फलसफे बन जाते हैं
हमारे बुजुर्ग। [25,26,27]

संदर्भ

1. रामविलास, शर्मा (2008). प्रेमचंद और उनका युग. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन. पृ॰ 17. आई॰ऍस॰बी॰ऍन॰ 978-81-267-0505-4.
2. ↑ रामविलास, शर्मा (2008). प्रेमचंद और उनका युग. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन. पृ॰ 18. आई॰ऍस॰बी॰ऍन॰ 978-81-267-0505-4.
3. ↑ रामविलास शर्मा, प्रेमचंद और उनका युग, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1995, पृष्ठ 15
4. ↑ रामविलास, शर्मा (2008). प्रेमचंद और उनका युग. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन. पृ॰ 19. आई॰ऍस॰बी॰ऍन॰ 978-81-267-0505-4.
5. ↑ बाहरी, डॉ॰ हरदेव (१९८६). साहित्य कोश, भाग-2,. वाराणसी: ज्ञानमंडल लिमिटेड. पृ॰ ३५६.
6. ↑ "Munshi Premchand: गांधी और प्रेमचंद का साथ-साथ चलना हिंदी साहित्य में एक महान उपलब्धि". Dainik Jagran. अभिगमन तिथि 2020-07-31.
7. ↑ बाहरी, डॉ॰ हरदेव (१९८६). साहित्य कोश, भाग-2,. वाराणसी: ज्ञानमंडल लिमिटेड. पृ॰ ३५७.
8. ↑ रामविलास, शर्मा (2008). प्रेमचंद और उनका युग. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन. पृ॰ 20. आई॰ऍस॰बी॰ऍन॰ 978-81-267-0505-4.
9. ↑ यह उपन्यास उर्दू साप्ताहिक 'आवाजे खल्क' में 8 अक्टूबर 1903 से 1 फ़रवरी 1905 तक धारावाहिक रूप से प्रकाशित हुआ। इसमें लेखक का नाम छपा था- मुंशी धनपतराय उर्फ नवाबराय इलाहाबादी। बाद में स्वयं प्रेमचंद ने इसका हिन्दी तर्जुमा 'देवस्थान रहस्य' नाम से किया, जो उनके पुत्र अमृतराय द्वारा उनके आरंभिक उपन्यासों के संकलन 'मंगलाचारण' में संकलित है।
10. ↑ रामविलास, शर्मा (2008). प्रेमचंद और उनका युग. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन. पृ॰ 21. आई॰ऍस॰बी॰ऍन॰ 978-81-267-0505-4.
11. ↑ NEWS, SA (2021-07-30). "Munshi Premchand Jayanti (मुंशी प्रेमचंद जयंती): 'गोदान' उपन्यास के रचयिता प्रेमचंद के बारे में जाने सम्पूर्ण जानकारी". SA News Channel (अंग्रेज़ी में). अभिगमन तिथि 2021-07-30.
12. ↑ सिंह, डॉ॰बच्चन (1972). प्रतिनिधि कहानियाँ. वाराणसी: अनुराग प्रकाशन, विशालाक्षी, चौक. पृ॰ 9.
13. ↑ अमृतराय (1976). प्रेमचंद क़लम का सिपाही. इलाहाबाद: हंस प्रकाशन. पृ॰ 616-17.
14. ↑ वीर भारत, तलवार (2008). किसान राष्ट्रीय आन्दोलन और प्रेमचन्द:1918-22. नयी दिल्ली: वाणी प्रकाशन. पृ॰ 19-20.
15. ↑ अमृतराय (1976). प्रेमचंद क़लम का सिपाही. इलाहाबाद: हंस प्रकाशन. पृ॰ 618.
16. ↑ अमृतराय (1976). प्रेमचंद क़लम का सिपाही. इलाहाबाद: हंस प्रकाशन. पृ॰ 619.
17. ↑ डॉ कमल किशोर गोयनका (संपादक)- "प्रेमचंद कहानी रचनावली", 6 भागों में, साहित्य अकादमी, नई दिल्ली, भूमिका (भाग-१)
18. ↑ प्रेमचंद (१९३८). सप्तसरोज. ज्ञानवापी, काशी: हिन्दी पुस्तक एजेंसी. पृ॰ 1.
19. ↑ हिन्दी का गद्य साहित्य - डॉ॰ रामचंद्र तिवारी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, 2006, पृष्ठ संख्या- 518

20. ↑ Desk, India com Hindi News. "जब प्रेमचंद ने लिखा पहला नाटक और मामा ने कर दिया गायब, पढ़िए 'कलम का सिपाही' की पहली कहानी". India News, Breaking News, Entertainment News | India.com. अभिगमन तिथि 2020-08-01.
21. ↑ "कई पत्र-पत्रिकाओं का संपादन भी किया था मुंशी प्रेमचंद". Dainik Jagran. अभिगमन तिथि 2020-07-31.
22. ↑ "रचना दृष्टि की प्रासंगिकता -मन्नू भंडारी" (एसएचटीएमएल). बीबीसी. मूल से 7 अगस्त 2007 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 9 मार्च 2008.
23. ↑ "'हिंदी के पहले प्रगतिशील लेखक थे प्रेमचंद'" (एसएचटीएमएल). बीबीसी. मूल से 27 मई 2006 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 9 मार्च 2008.
24. ↑ रामविलास, शर्मा (2008). प्रेमचंद और उनका युग. नयी दिल्ली: राजकमल प्रकाशन. पृ॰ 13. आई॰ऍस॰बी॰ऍन॰ 978-81-267-0505-4.
25. ↑ "'स्वस्थ साहित्य किसी की नक़ल नहीं करता'" (एसएचटीएमएल). बीबीसी. मूल से 28 सितंबर 2009 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 9 मार्च 2008.
26. ↑ रामविलास, शर्मा (2008). प्रेमचंद और उनका युग. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन. पृ॰ 185. आई॰ऍस॰बी॰ऍन॰ 978-81-267-0505-4.
27. ↑ "Oka Oori Katha" (अंग्रेज़ी में). मृणालसेन.ऑर्ग. मूल से 6 जनवरी 2009 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 5 जुलाई 2008.